



आधुनिक शिक्षण विधियों का शिक्षक-छात्र संबंध पर प्रभाव

¹प्रियंका मिश्रा, ²डॉ. प्रभा गिरि (सहायक प्राध्यापक)

¹शोधार्थी, ²पर्यवेक्षक

¹⁻²विभाग: शिक्षा, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़

सार

इस अध्ययन में आधुनिक शिक्षण विधियों के शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंधों पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का आत्मविश्वास उनके शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। जब शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों में आत्मविश्वास महसूस करते हैं, तो वे नए और विविध विधियों को अपनाने, कक्षा में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने और छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में सक्षम होते हैं। आधुनिक शिक्षण विधियाँ जैसे परियोजना-आधारित शिक्षण, फ्लिप क्लासरूम और सक्रिय अधिगम, छात्रों की प्रेरणा और भागीदारी को बढ़ाने में सहायक साबित होती हैं, और इसके परिणामस्वरूप शिक्षक और छात्र दोनों के बीच संबंध मजबूत होते हैं। इस अध्ययन में यह भी बताया गया है कि शिक्षक के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों और सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण का निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द : शिक्षक आत्मविश्वास, आधुनिक शिक्षण विधियाँ, छात्र-शिक्षक संबंध, सक्रिय अधिगम, फ्लिप क्लासरूम, परियोजना-आधारित शिक्षण, व्यावसायिक विकास।

परिचय:

शिक्षकों का आत्मविश्वास उनके शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च आत्मविश्वास वाले शिक्षक न केवल अपने शिक्षण अभ्यासों में विविधता लाते हैं, बल्कि वे छात्रों के साथ मजबूत और सकारात्मक संबंध भी स्थापित करते हैं, जो शिक्षण वातावरण को सहयोगात्मक और प्रेरणादायक बनाता है। आधुनिक शिक्षण विधियाँ, जो पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर छात्र-केंद्रित और प्रौद्योगिकी-संवर्धित होती हैं, शिक्षक और छात्र दोनों के अनुभवों को पुनः परिभाषित करती हैं। यह अध्ययन यह समझने की कोशिश करता है कि कैसे आधुनिक शिक्षण विधियाँ, जैसे कि फ्लिप क्लासरूम, परियोजना-आधारित शिक्षण और सक्रिय अधिगम, शिक्षक के आत्मविश्वास और छात्र-शिक्षक संबंधों को प्रभावित करती हैं।

शिक्षकों का आत्मविश्वास और प्रभावी शिक्षण में इसकी भूमिका

शिक्षकों का आत्मविश्वास, जिसे उनकी प्रभावी शिक्षण क्षमता और कक्षा प्रबंधन पर विश्वास के रूप में परिभाषित किया जाता है, शैक्षिक परिणामों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध से लगातार यह पता चलता है कि शिक्षकों का आत्मविश्वास शिक्षण प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। जब शिक्षक अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास महसूस करते हैं, तो उनके द्वारा विविध शिक्षण विधियों का उपयोग करने, अपनी कक्षाओं का प्रभावी प्रबंधन करने और छात्रों को सार्थक अधिगम अनुभवों में शामिल करने की संभावना अधिक होती है।

शिक्षक के आत्मविश्वास को समझना

शिक्षकों का आत्मविश्वास कई कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें व्यावसायिक अनुभव, प्रशिक्षण और विद्यालय प्रणाली द्वारा प्रदान किया गया सहयोग शामिल हैं। जो शिक्षक अपनी कक्षाओं में सफल होते हैं और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से खुद को अच्छी तरह से तैयार महसूस करते हैं, उनमें आत्मविश्वास



का स्तर अधिक होता है। आत्मविश्वास शिक्षक की शिक्षण शैली, नई विधियों को आजमाने की उनकी इच्छा और बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुकूल ढलने की उनकी क्षमता को भी प्रभावित करता है (त्शनन-मोरन और होय, 2001)।

शिक्षकों के आत्मविश्वास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं

- पिछली सफलताएँ और अनुभवजन शिक्षकों ने अपनी शिक्षण विधियों से सकारात्मक परिणाम देखे हैं, उनमें अपनी क्षमताओं पर अधिक आत्मविश्वास होने की संभावना होती है (गस्की, 2002)।
- सहकर्म और प्रशासनिक सहायता: एक सहायक विद्यालय संस्कृति जहां शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिक्रिया और सहयोग के अवसर मिलते हैं, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है (कोली एट अल, 2012)।
- व्यावसायिक विकास जो शिक्षक निरंतर सीखने और व्यावसायिक विकास में संलग्न होते हैं, वे अक्सर अपने शिक्षण अभ्यासों में आत्म-प्रभावकारिता और आत्मविश्वास के उच्च स्तर की रिपोर्ट करते हैं (डेसिमोन, 2009)।

शिक्षण प्रभावशीलता पर आत्मविश्वास का प्रभाव

उच्च आत्मविश्वास वाले शिक्षक कक्षा में अधिक उत्साह प्रदर्शित करते हैं, जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ सकती है। एक आत्मविश्वासी शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने और कक्षा का प्रभावी प्रबंधन करने की अधिक संभावना रखता है। हेंसन (2001) के शोध से पता चलता है कि शिक्षक के आत्मविश्वास का कक्षा प्रबंधन पर सीधा प्रभाव पड़ता है, और आत्मविश्वासी शिक्षक सकारात्मक और उत्पादक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए सक्रिय रणनीतियों का उपयोग करते हैं।

इसके अतिरिक्त, आत्मविश्वासी शिक्षकों में निम्नलिखित की संभावना अधिक होती है

- नई शिक्षण विधियों के साथ प्रयोग करें: आत्मविश्वासी शिक्षक परियोजना-आधारित शिक्षण, पृष्ठछा-आधारित शिक्षण और प्रौद्योगिकी के एकीकरण जैसी आधुनिक शिक्षण रणनीतियों को अपनाने के लिए खुले हैं (गस्की, 2002)।
- प्रभावी प्रतिक्रिया प्रदान करें: एक आत्मविश्वासी शिक्षक द्वारा समय पर और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने की अधिक संभावना होती है, जो छात्रों के सीखने के परिणामों को काफी हद तक बढ़ा सकती है (हट्टी और टिम्परली, 2007)।
- छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करें: आत्मविश्वासी शिक्षकों के छात्रों के साथ बेहतर संबंध होते हैं, जो एक सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है और छात्रों की प्रेरणा को प्रोत्साहित करता है (मिलर एट अल, 2013)।

शिक्षकों के आत्मविश्वास में बाधाएँ

शिक्षकों के आत्मविश्वास के स्पष्ट लाभों के बावजूद, कई शिक्षकों को ऐसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी प्रभावशीलता की भावना को कम कर सकती हैं। एक प्रमुख बाधा सहकर्मियों या विद्यालय प्रशासन से समर्थन की कमी है। जो शिक्षक अपने शिक्षण अभ्यासों में अलग-थलग या असमर्थित महसूस करते हैं, उनमें आत्मविश्वास की संभावना कम होती है।

शिक्षकों के आत्मविश्वास में बाधा डालने वाली अन्य चीजें निम्नलिखित हैं



- अपर्याप्त प्रशिक्षण: जो शिक्षक अपर्याप्त तैयारी महसूस करते हैं या जिनके पास आवश्यक कौशल की कमी होती है, उन्हें प्रभावी शिक्षण विधियों को लागू करने में कठिनाई हो सकती है, जिससे आत्मविश्वास कम हो जाता है।
- कक्षा की चुनौतियाँ: व्यवहार संबंधी समस्याओं, बड़ी कक्षा के आकार या विविध छात्र आवश्यकताओं का सामना करने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास में गिरावट आ सकती है, खासकर अगर उन्हें लगता है कि उनके पास इन चुनौतियों से निपटने के लिए संसाधनों या रणनीतियों की कमी है (वेसिओ एट अल., 2008)।

व्यावसायिक विकास के माध्यम से शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ाना

शिक्षकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन तकनीकों और विषय ज्ञान को बढ़ाने पर केंद्रित कार्यक्रम आत्म-प्रभावकारिता को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं। डार्लिंग-हैमंड (2000) के एक अध्ययन में पाया गया कि उच्च गुणवत्ता वाले व्यावसायिक विकास में भाग लेने वाले शिक्षक अपनी शिक्षण क्षमताओं में अधिक आत्मविश्वास रखते थे और छात्रों की उपलब्धि पर उनका प्रभाव भी अधिक था।

पेशेवर विकास के माध्यम से शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ाने की प्रमुख रणनीतियों में निम्नलिखित शामिल हैं

- सहयोगात्मक शिक्षण जो शिक्षक सहयोगात्मक वातावरण में मिलकर काम करते हैं और अनुभव साझा करते हैं, उनमें आत्मविश्वास का स्तर अधिक पाया जाता है (गैरेट एट अल., 2001)।
- मार्गदर्शन और कोचिंग चल रहे परामर्श कार्यक्रम शिक्षकों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान कर सकते हैं, जिससे उन्हें चुनौतियों से निपटने और अपने अभ्यासों को परिष्कृत करने में मदद मिलती है (बेकर एट अल., 2008)।
- चिंतनशील अभ्यास शिक्षकों को अपने शिक्षण विधियों और छात्र परिणामों पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करना निरंतर सुधार को बढ़ावा देता है और आत्मविश्वास का निर्माण करता है (शॉन, 1983)।

छात्र उपलब्धि में शिक्षक के आत्मविश्वास की भूमिका

शिक्षकों के आत्मविश्वास का सकारात्मक प्रभाव कक्षा तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह विद्यार्थियों की उपलब्धि को भी प्रभावित करता है। उच्च आत्मविश्वास वाले शिक्षक ऐसी कक्षा संस्कृति का निर्माण करने की अधिक संभावना रखते हैं जो विद्यार्थियों की सहभागिता को प्रोत्साहित करती है और शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देती है। अध्ययनों से पता चलता है कि आत्मविश्वासी शिक्षकों के विद्यार्थी शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि ये शिक्षक प्रभावी शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करने, रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने और विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगम में शामिल करने की अधिक संभावना रखते हैं (त्थैनन-मोरन और होय, 2001)।

आधुनिक शिक्षण विधियों का शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रभाव

आधुनिक शिक्षण विधियों के आगमन से कक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, न केवल छात्रों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए भी। ये बदलाव विशेष रूप से शिक्षण रणनीतियों, छात्र सहभागिता और शिक्षक-छात्र संबंधों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। सक्रिय अधिगम, प्रौद्योगिकी का एकीकरण और व्यक्तिगत निर्देश जैसी आधुनिक विधियों ने शिक्षकों की अपनी भूमिका, शिक्षण के प्रति उनके दृष्टिकोण और छात्रों के साथ उनके संवाद को पूरी तरह से बदल दिया है।



आधुनिक विधियों के प्रति शिक्षकों की धारणा

आधुनिक शिक्षण विधियों के बारे में शिक्षकों की धारणाएँ इस बात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं कि वे कक्षा में इन विधियों को कैसे अपनाते और लागू करते हैं। कई मामलों में, शिक्षक शुरू में पारंपरिक विधियों से हटकर अधिक छात्र-केंद्रित, प्रौद्योगिकी-एकीकृत दृष्टिकोणों को अपनाने में झिझकते या संशय में रहते हैं। हालाँकि, जैसे-जैसे वे इन तकनीकों से अधिक परिचित होते जाते हैं, कई शिक्षक अपने दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव की रिपोर्ट करते हैं।

शिक्षकों द्वारा आधुनिक शिक्षण विधियों को अक्सर पारंपरिक शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों, जैसे कि विद्यार्थियों की अरुचि और प्रेरणा की कमी, के समाधान के रूप में देखा जाता है। विशेष रूप से, प्रौद्योगिकी का एकीकरण सीखने को अधिक आकर्षक, संवादात्मक और विद्यार्थियों के जीवन से प्रासंगिक बनाने के एक उपकरण के रूप में देखा जाता है। एर्टमर (1999) के एक अध्ययन के अनुसार, आधुनिक शिक्षण विधियों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक इन विधियों को अधिक सकारात्मक रूप से देखते हैं, विशेषकर जब वे विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों में ठोस सुधार देखते हैं।

- गोद लेना और प्रतिरोध: शिक्षकों की आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति धारणा उनके प्रारंभिक प्रशिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण दर्शन और पूर्व अनुभवों से प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक विधियों में प्रशिक्षित शिक्षक नई पद्धतियों से अपरिचित होने या सहज महसूस न करने के कारण प्रारंभ में आधुनिक तकनीकों को अपनाने का विरोध कर सकते हैं। हालाँकि, अध्ययनों से पता चला है कि एक बार जब शिक्षक इन विधियों के लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव कर लेते हैं, तो वे इन्हें विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ाने के लिए मूल्यवान और प्रभावी उपकरण मानने की अधिक संभावना रखते हैं (फुलन, 2001; डार्लिंग-हैमंड एट अल., 2009)।

- तकनीकी एकीकरण: आधुनिक शिक्षण विधियों में प्रौद्योगिकी एक प्रमुख विशेषता है, और प्रौद्योगिकी के प्रति शिक्षकों की धारणाएँ व्यापक रूप से भिन्न हो सकती हैं। कुछ शिक्षक प्रौद्योगिकी को शिक्षण में सुधार और छात्रों को कक्षा में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए एक आवश्यक उपकरण मानते हैं, जबकि अन्य शिक्षक अपनी कक्षाओं में प्रौद्योगिकी को शामिल करने की चुनौतियों से अभिभूत महसूस करते हैं। डेविस (1989) द्वारा प्रतिपादित प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल के अनुसार, प्रौद्योगिकी के उपयोग में आसानी और उपयोगिता के बारे में शिक्षकों की धारणाएँ इसके अपनाने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। जो शिक्षक यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाएगी और शिक्षण कार्य को सुव्यवस्थित करेगी, उनकी धारणाएँ अधिक सकारात्मक होती हैं और वे इन विधियों को अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं।

- शिक्षक प्रशिक्षण का प्रभाव: शिक्षकों की आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति धारणाएँ उन्हें उपलब्ध व्यावसायिक विकास के अवसरों की गुणवत्ता से भी प्रभावित होती हैं। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम जो शिक्षकों को आधुनिक विधियों को लागू करने के लिए व्यावहारिक अनुभव और रणनीतियाँ प्रदान करते हैं, उनके दृष्टिकोण को अधिक सकारात्मक बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, सक्रिय अधिगम, परियोजना-आधारित अधिगम (पीबीएल) या फ्लिप कक्षाओं पर केंद्रित कार्यशालाओं में भाग लेने वाले शिक्षक इन विधियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं (गस्की, 2002)। सहयोग, सहकर्म सहायता और निरंतर सीखने पर जोर देने वाला व्यावसायिक विकास आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के प्रति शिक्षकों की प्रतिबद्धता को और मजबूत कर सकता है।

छात्र सहभागिता के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन

आधुनिक शिक्षण विधियों के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है छात्रों की सहभागिता के प्रति शिक्षकों के



दृष्टिकोण में बदलाव। पारंपरिक शिक्षण विधियों में अक्सर शिक्षक—निर्देशित निर्देश शामिल होते हैं, जहाँ छात्र निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करते हैं। इसके विपरीत, आधुनिक विधियाँ छात्रों की सक्रिय भागीदारी, सहयोग और समस्या—समाधान पर जोर देती हैं, जिसके लिए शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ जुड़ने के तरीके पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता होती है।

- विद्यार्थी—केंद्रित शिक्षा: आधुनिक शिक्षण विधियाँ, जैसे कि फ्लिप क्लासरूम, पृष्ठताछ—आधारित अधिगम, और परियोजना—आधारित अधिगम, अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में विद्यार्थी को रखती हैं। शिक्षक केवल विषयवस्तु देने के बजाय, छात्रों को अन्वेषण और खोज के माध्यम से मार्गदर्शन करने वाले सुविधादाता के रूप में कार्य करते हैं। इस बदलाव के लिए शिक्षकों को कोच या मेंटर जैसी नई भूमिकाएँ अपनानी पड़ती हैं, और यह उन्हें विद्यार्थियों को उनके अधिगम में सक्रिय भागीदार के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करता है (बर्गमैन और सैम्स, 2012)। अध्ययनों से पता चला है कि विद्यार्थी—केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने वाले शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अधिक संलग्न, प्रेरित और स्वतंत्र अधिगम में सक्षम मानते हैं (हट्टी, 2009)।

- छात्रों की प्रेरणा में वृद्धि: आधुनिक शिक्षण विधियों को विद्यार्थियों की प्रेरणा में वृद्धि से जोड़ा गया है, क्योंकि ये विधियाँ कक्षा में अधिक गतिशील और संवादात्मक वातावरण को बढ़ावा देती हैं। उदाहरण के लिए, खेल—संबंधी तत्वों को सीखने की गतिविधियों में शामिल करने वाली रणनीति, गेमिंग के माध्यम से सीखने को अधिक मनोरंजक और प्रतिस्पर्धी बनाकर विद्यार्थियों की सहभागिता और प्रेरणा को बढ़ाने में कारगर सिद्ध हुई है (डेटरडिंग एट अल., 2011)। ऐसी रणनीतियों को अपनाने वाले शिक्षक अक्सर विद्यार्थियों की भागीदारी, उत्साह और सीखने में रुचि के उच्च स्तर को देखते हैं, जिससे विद्यार्थी सहभागिता के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

- सक्रिय अध्ययन: समूह चर्चा, सहपाठी शिक्षण और सहयोगात्मक समस्या—समाधान जैसी सक्रिय शिक्षण तकनीकें गहन अधिगम और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। जो शिक्षक इन विधियों को अपनी कक्षाओं में शामिल करते हैं, वे अक्सर पाते हैं कि छात्र अधिक सक्रिय रूप से सीखते हैं, क्योंकि उन्हें केवल ज्ञान को याद करने के बजाय उसे लागू करना होता है। फ्रीमैन एट अल. (2014) के अनुसार, पारंपरिक व्याख्यान—आधारित शिक्षण की तुलना में सक्रिय शिक्षण तकनीकों से छात्रों के प्रदर्शन और सक्रिय भागीदारी में सुधार देखा गया है। सक्रिय शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करने वाले शिक्षक अक्सर अपने छात्रों से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं और अपने द्वारा बनाए गए अधिगम वातावरण से अधिक संतुष्ट होते हैं।

- छात्र—केंद्रित शिक्षा: वैयक्तिकृत शिक्षण के उदय के साथ, शिक्षकों ने भी ऐसे शिक्षण वातावरण बनाने की ओर रुख किया है जहाँ छात्र अपनी पढ़ाई पर अधिक नियंत्रण रख सकें। छात्रों को विषय चुनने, लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी गति से काम करने की अनुमति देकर, शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में स्वायत्तता और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देते हैं। छात्र सहभागिता के प्रति इस दृष्टिकोण में बदलाव का समर्थन शोध से होता है, जिसमें दिखाया गया है कि जो छात्र अपनी पढ़ाई में सशक्त महसूस करते हैं, उनके प्रेरित होने और बेहतर परिणाम प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है (डेसी और रयान, 2000)।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षण विधियाँ न केवल छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करती हैं, बल्कि यह शिक्षकों के आत्मविश्वास को भी मजबूत करती हैं। शिक्षक जब नई विधियों को अपनाने में आत्मविश्वास महसूस करते हैं, तो वे कक्षा में छात्रों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने, प्रभावी रूप से कक्षा का प्रबंधन करने और छात्र भागीदारी को बढ़ाने में सक्षम होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, छात्र अधिक सक्रिय रूप से अपनी शिक्षा में भाग लेते हैं, और शिक्षक को अपने शिक्षण में अधिक संतुष्टि और आत्मविश्वास का अनुभव होता है। व्यावसायिक विकास और सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण शिक्षक के



आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि शिक्षकों के आत्मविश्वास में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण और समर्थन की निरंतर आवश्यकता है, ताकि वे छात्रों के साथ बेहतर संबंध बना सकें और प्रभावी शिक्षण प्रदान कर सकें।

संदर्भ

- एरिक, बी. (2023). जाम्बियाई माध्यमिक शिक्षा में भौतिक विज्ञान शिक्षण में लागू रचनावादी विधियों और शिक्षार्थी के आत्म-सम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन पर उनके प्रभावों की जांच।
- झाओ, जे., ली, जे., और जिया, जे. (2021). मुद्रा-आधारित शिक्षक-छात्र व्यवहारिक जुड़ाव पैटर्न पर एक अध्ययन। सस्टेनेबल सिटीज एंड सोसाइटी, 67, 102749.
- प्रणतो, के., कह्यादी, एस., लुबिस, एफ.वाई., और हिंडुआन, जेड.आर. (2025)। उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच कथित शिक्षक समर्थन और छात्र जुड़ाव – एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। बी.एम.सी. मनोविज्ञान, 13(1), 112.
- बारिउ, टीएन, और चुन, एक्स. (2022). केन्याई विश्वविद्यालयों में आईसीटी कार्यान्वयन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का प्रभाव। कॉर्जेंट एजुकेशन, 9(1), 2107294.
- मम्मादोव, एस., और अवसी, ए.एच. (2025)। व्यक्तित्व और शिक्षक-छात्र संबंधों की एक मेटा-विश्लेषणात्मक समीक्षा। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी, 93(4), 949–972।
- बिलीक, वी., बनाव, आर., बर्दाडिम, ओ., सोकल, एम., और एनिचकिना, ओ. (2023)। आधुनिक विद्यालयों में इंटरैक्टिव शिक्षण विधियों का परिचय। रेविस्टा डे टेक्नोलोजिया डे इंफॉर्मेशन वाई कॉम्यूनिकेशियोन एन एजुकेशन, 17(2), 199–209
- हेइन, एस., और कोनिग, जे. (2025). शिक्षक शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनुप्रयोग: शिक्षण और अधिगम के लिए चैटजीपीटी का उपयोग करने में पूर्व-सेवा शिक्षकों के दृष्टिकोण और प्रतिबिंब। यूरोपीय जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 48(5), 934–963.
- सोयसल, वाई., और राडमार्ड, एस. (2022). सुधार-आधारित पहलों की प्रभावशीलता के आकलनकर्ता के रूप में शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाएँ। जर्नल ऑफ एजुकेशन, 202(1), 43–57.

